# नक्सलवादी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका

**राहुल कुमार,**
*शोधार्थी,*
*रक्षा एवं स्त्रॉतेजिक अध्ययन विभाग, बिड़ला परिसर, हे0नं0ब0ग0केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड*

**डॉ0 कमलेश चन्द्र पाण्डेय,**
*अतिथि शिक्षक*
*रक्षा एवं स्त्रॉतेजिक अध्ययन विभाग, बिड़ला परिसर, हे0नं0ब0ग0केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड*

आज भारत में महिलाएं दिन–प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत एवं सराहनीय कार्यों द्वारा राष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो रही हैं। वहीं महिलाएं एक नए भारत के आगाज की अहम कड़ी दिख रही हैं साथ ही लंबे अरसे के अथक परिश्रम के बाद आज भारतीय महिलाएं समूचे विश्व में अपने पदचिन्ह छोड़ रही हैं। हमें कहने में कोई गुरेज नहीं है कि पुरुष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएं निश्चित रूप से आगामी स्वर्णिम भारत की नींव और मजबूत करने का हर संभव प्रयास करेंगी, जो सचमुच काबिले तारीफ है। हां, यह जरूर है कि कुछ जगह अब भी महिलाएं घर की चारदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परंपराओं का बोझ ढो रही हैं। वजह भी साफ है, पुरूष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बंधे होना।[1] भारतीय संविधान प्रस्तावना मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्य तथा निर्देशक सिद्धांत में यथा–निहित अनुसार सभी लिंगों को समान अधिकार देता है। भारत में महिलाओं को लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करने और कानून के तहत समान शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है। संविधान महिलाओं को न केवल समानता प्रदान करता है, अपितु महिलाओं को संचई सामाजिक–आर्थिक तथा राजनीतिक नुकसान को समाप्त करने के लिए महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपायों को अपनाने के लिए राज्य को अधिकृत नहीं करता है। यह महिलाओं की गरिमा के प्रतिकूल प्रभाव को समाप्त करने का मौलिक कर्तव्य नागरिकों पर डालता है।[2] लेकिन उपरोक्त सभी बातों का तात्पर्य भारत में ही नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की महिलाओं की स्थिति से कतिपय भिन्न है, खासकर वे महिलाएं जो कि विभिन्न कारणों से विद्रोही गुटों में शामिल हो गईं और नक्सलवाद का हिस्सा बन गईं। इन कारणों में बड़े व्यावसायिक प्रोजेक्ट के कारण स्थानीय स्तर पर लोगों का अपनी जमीनों से विस्थापन, गरीबी का दुष्चक्र और सुरक्षा बलों के अत्याचार के भय और सरकार–समर्थित सलवा–जुडूम जैसे संगठनों के कारण महिलाएं बड़ी संख्या में माओवादी समूहों में शामिल हो रही थीं।पुलिस अधिकारी कहते हैं कि माओवादी महिलाओं को अपने दल से जोड़ने में विचारधारा की कोई समस्या नहीं देखते।[3] सी.पी.आई. (माओवादी) के अनुसार, 2010 में महिलाओं ने अपने कैडर के 40 प्रतिशत का गठन किया, जिनमें से ज्यादातर महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक क्रूर बताई गईं। हालाँकि, यह हाल की घटना नहीं है। महिलाओं ने अपनी उत्पत्ति के बाद से क्रांतिकारी नक्सलबाड़ी आंदोलन में भाग लिया है। किसी भी संघर्ष में अक्सर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का मिश्रण होता है, और हिंसा और आतंक फैलता है जिसे 'सेफ्टी जोन' के रूप में जाना जाता है। प्रायः नक्सली आंदोलन में महिलाओं ने लड़ाकों, शांति निर्माता, कार्यकर्ताओं और राजनेताओं के रूप में विभिन्न भूमिकाएं निभाई हैं। इस आंदोलन के कारण, जो उत्पीड़ित वर्गों के कारण जासूसी करते हैं, उन्होंने भी महिलाओं के प्रति एक

समावेशी दृष्टिकोण अपनाया है, जिसका विश्लेषण किया जाना बाकी है। चारु मजूमदार, ने खुद लिखा था कि महिलाओं को दस्तों में शामिल नहीं होना चाहिए। इस प्रकार महिलाओं को हिंसा की वस्तुओं और डर के विषयों के रूप में देखने के लिए उनके प्रति 'सुरक्षात्मक' दृष्टिकोण मानने से पता चलता है कि महिलाएं क्रांतिकारी आंदोलन में समान नहीं हैं और शायद उन्हें कभी भी समान नहीं माना जा सकता है। नक्सलबाड़ी आंदोलन के शुरुआती चरणों में, विशेष रूप से मध्यम वर्ग की कई महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों (भाइयों, पतियों, दोस्तों और रिश्तेदारों) के प्रभाव में आंदोलन में शामिल हुईं। हालाँकि, यहां तक कि नक्सलबाड़ी आंदोलन के चरम पर, महिलाओं को केवल पुरुषों की सहायता करने या साधारण और संदेशवाहक कार्यों को करने के लिए भर्ती किया गया था। उच्च मध्यम वर्ग की महिलाओं को अक्सर निम्न मध्यम वर्ग की महिलाओं की तुलना में बेहतर स्थिति मिली। लेकिन यदि कोई महिला राज्य का समर्थन करती है या नक्सली कैडर से बाहर निकलती है तो आसानी से नक्सलियों की क्रूरता का शिकार हो सकती है। अब महिलाएं उच्च वर्ग, धर्म, जाति समुदायों या राज्य के मंचों द्वारा उत्पीड़न और यौन उत्पीड़न से लेकर विभिन्न कारणों से नक्सल कैडर में शामिल हो रही हैं।[4]

माओवादी आंदोलन 1960 के दशक में पश्चिम बंगाल राज्य के एक छोटे से चाय बागान में किसान विद्रोह के साथ शुरू हुआ था। माओवादी, जिन्हें 'नक्सली' भी कहा जाता है, मध्य और पूर्वी भारत में 40 से अधिक वर्षों से काम कर रहे हैं। वे गरीबों के लिए भूमि और रोजगार की मांग करते हैं, और अंततः भारत के 'अर्ध–औपनिवेशिक, अर्ध–सामंती' शासन के रूप को उखाड़ फेंककर एक साम्यवादी समाज की स्थापना करना चाहते हैं। भारत के माओवादी विद्रोही समूह तेजी से अपने संचालन के लिए महिलाओं को काम पर रख रहे हैं। एक आदिवासी लड़की रेबेका पूर्वी भारतीय राज्य उड़ीसा में भारत के माओवादी विद्रोही समूह के एक स्थानीय क्षेत्र कमांडर की अंगरक्षक रही। पुलिस का कहना है कि महिला लड़ाके अपने पुरुष समकक्षों पर नजर रखती हैं। रेबेका का कहना है कि 'राज्य दमन' ने उसे हथियार उठाने और विद्रोहियों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। छत्तीसगढ़ के बस्तर के माओवादी गढ़ के पूर्व पुलिस प्रमुख राहुल भगत का था कि 'माओवादी महिलाओं को लड़ने के लिए भर्ती करते हैं और ग्रामीणों को परेशान करने वाले पुरुष कैडरों पर निगरानी रख सकते हैं।' वास्तव में, लगभग आधे विद्रोही सेनानी अब महिलाएं हैं। अधिकांश पुरुष और महिला सेनानी या तो विवाहित या अविवाहित जोड़ों के रूप में रहते हैं।[5] महिलाएं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी), या माओवादियों के युद्ध तंत्र का एक सक्रिय हिस्सा रही हैं। विद्रोहियों के बीच महिला कैडर की संख्या 1990 के दशक के उत्तरार्ध में बढ़ने लगी। कुछ हताशा के कारण भूमिगत हो गए। गांव में उच्च और शक्तिशाली के हाथों शोषण होना भी एक और कारण है। वर्ष 2004 में, बिहार में, पुलिस ने कथित तौर पर नक्सलियों की लड़कियों के एक समूह को बचाया और उन्हें मिशनरियों द्वारा संचालित एक स्थानीय व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान में भर्ती कराया। महिलाएं सेनानियों के रूप में शामिल होती हैं और पुलिस पर छापे और हमलों में भाग लेती हैं। कुछ निडर होते हैं और अच्छे लड़ाके बनाते हैं। उन्हें मिलने वाला सैन्य प्रशिक्षण उतना ही कठोर और कठोर है। जितना कि उनके पुरुष समकक्षों को। वास्तव में, कुछ महिला स्क्वाड कमांडर और प्लाटून सेक्शन कमांडर देश के विभिन्न हिस्सों में हैं, विशेष रूप से उत्तरी तेलंगाना और दंडकारण्य गुरिल्ला क्षेत्रों में।[6]

नक्सलवाद में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन महिला नक्सलियों की बढ़ती हुई सहभागिता से सम्भव हुआ। आज नक्सली

गतिविधियों में महिला उग्रवादियों की भूमिका लगातार बढ़ रही है। साथ ही उनके द्वारा हिंसात्मक गतिविधियों को बर्बरता के साथ अंजाम दिया जा रहा है। उदाहरणार्थ– छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के नेताओं की हत्या नक्सलवादी बच्चों और महिलाओं को अपनी ढाल बनाकर हिंसक गतिविधि संचालित कर रहे हैं।[7] नक्सली महिलाओं को अपने खेमे में शामिल करते हैं और उन्हें बतौर लड़ाके की तरह इस्तेमाल करते हैं। कुछ महिलायें काफी अहम और पॉवरफुल भी हैं जो अभियान में अहम भूमिका निभाती हैं। महिलाओ की मदद से गांवों के बारे में अच्छी खासी जानकारी हासिल की जाती है।अधिकतर मामलों में यह बात सामने आयी है कि गांव की ही महिला ने नक्सलियों के साथ जानकारी साझा की। महिलाओं की जो अहम जिम्मेदारी होती है वह है गांवों में सेना और पुलिस की मौजूदगी के बारे में अवगत कराना जिसका नक्सली फायदा उठा सके।[8] गुरिल्ला युद्ध में प्रवीण नक्सलियों के दो ग्रुप दलम तथा संगम में विभाजित हैं। नक्सली वर्दी तथा हथियार धारण करने वाले दलम में नक्सली हार्डकोर नक्सली हैं। स्थानीय गांव में रहने वाले संगम ग्रुप के लोग दलम समर्थक हैं जो दलम नक्सलियों को हर प्रकार की सूचनाएं देते हैं। दलम (हथियारों से युक्त) में महिला नक्सलियों की संख्या भी कम नहीं है।[9] छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव के कोहका थाना क्षेत्र के कोंडाल पहाड़ी के पास आई.टी.बी.पी. और छत्तीसगढ़ पुलिस के संयुक्त अभियान में नक्सली महिला जरीना को मार गिराया गया। उसके पास से दो बंदूक और भारी मात्रा में विस्फोटक जब्त किया गया। हालांकि मानपुर थाने में जरीना के खिलाफ 16 अपराध पंजीकृत थे, साथ ही बालाधार में मध्य प्रदेश पुलिस के जवानों पर हुए हमले में उसकी सक्रिय भूमिका थी।[10] गोली, बंदूक और हिंसा की बात करने वाली 20–22 वर्षीय अनीता साहू जो कि पी.एल.एफ.आई. की एरिया कमांडर थी का कहना था कि वह वर्ष 2013 में पहाड़ी चीता के अपराधियों द्वारा उसके पिता और मां की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए पी.एल.एफ.आई. से जुड़ी हालांकि अब उन्होंने हिंसा का रास्ता त्याग दिया है।[11]

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की महिलाओं को यदि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल सी0आर0पी0एफ0 (CRPF) का साथ नहीं मिलता तो देर सवेर उनके हाथों में सरकारी मशीनरी के खिलाफ बंदूके थमा दी जाती। नक्सलियों के चंगुल में फंसकर उत्पीड़न की शिकार होने या फिर बंदूके थाम उन्हीं की जमात में शामिल होने की आशंकाओं को कोसों दूर पीछे छोड़ काले रंग की कमांडो ड्रेस में सजी सैकड़ों महिलाएं सरकारी प्रतिष्ठानों तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सुरक्षा में जुट गईं। सी.आर.पी.एफ. की इसी मुहिम के तहत लगभग 350 से अधिक महिलाओं ने कमांडो प्रशिक्षण प्राप्त किया खुफिया एजेंसियों और सी.आर.पी.एफ. के संयुक्त नेटवर्क के जरिए यह जानकारी मिली कि उड़ीसा, झारखंड तथा बिहार सहित अन्य नक्सल ग्रस्त क्षेत्रों में मुख्य रूप से महिलाओं को जबरन नक्सली गतिविधियों में शामिल किया जा रहा है। सी.आर.पी.एफ. द्वारा ऐसे क्षेत्रों की पहचान कर महिलाओं को 3 माह की कमांडो ट्रेनिंग दी गई इतना ही नहीं बिहार के वजीरगंज, डुमरिया, मैनपुर, वाराछता, इमामगंज आदि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की 35 महिलाओं को प्रशिक्षण के उपरांत चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी में बतौर सुरक्षा गार्ड नौकरी भी दी गई साथ ही साथ पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड में महिला सुरक्षा गार्डों के नियमित बैच निकालने की तैयारी भी की गई।[12] नक्सलियों के मुद्दे हमेशा बदलते रहते हैं प्रारंभ में भूमिहीनों को भूमि तत्पश्चात प्रताड़ित. राष्ट्रियताओं के अधिकार और अब जल, जंगल और जमीन का प्रमुख मुद्दा है।[13] हालांकि इस पूरे घटनाओं को नक्सलियों ने सुनियोजित ढंग से अंजाम दिया। इसमें एक महिला नक्सली कमांडर के नेतृत्व में अन्य महिला नक्सलियों ने सबसे पहले गोलीबारी की शुरुआत की थी।[14]

11 फरवरी 2011 को नक्सलियों ने ओडिशा, झारखंड सीमा पर कांदरी लोहार नामक महिला की गोली मारकर हत्या कर दी थी। जबकि उक्त महिला वर्ष 2004 में नक्सलवाद को छोड़ चुकी थी, और प्रशासन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। कांदरी लोहार जनजाति वर्ग की महिला थी, जिसने हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण लिया था। कांदरी होमगार्ड के रूप में काम करके आजिविका चला रही थी। हालांकि होमगार्ड के पास किसी भी तरह का हथियार मौजूद नहीं होता कई बार तो उनके पास लाठी तक नहीं होती। ऐसी परिस्थिति में नक्सलवाद को छोड़कर मुख्यधारा में लौट चुकी महिला की सुरक्षा कैसे संभव हो पाएगी।[15] नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में यह रहस्योद्घाटन भी हुआ कि बड़ी तेजी से नक्सली एच.आई.वी./एड्स से पीड़ित हो रहे हैं। जिसके चलते कई नक्सलियों की मौतें भी हुई नक्सली नाबालिगों को भी नहीं बख्श रहे हैं। संगठन में शामिल युवतियां चाहते हुए भी इसका विरोध नहीं कर पाती हैं, और ना ही अपने घर वापस लौट पा रही हैं। पूरे लाल गलियारे में अनपढ़ आदिवासी महिलाओं को बिन ब्याही मां बनाया जा रहा है। वास्तव में आम निर्दोष नागरिकों की हत्या और महिलाओं का यौन शोषण ही नक्सली क्रांति का असली रूप है।[16]

13 जून 2013 को 200 नक्सलियों द्वारा बिहार के जमुई जिले में धनबाद पटना इंटरसिटी एक्सप्रेस पर हमला किया। लगभग डेढ़ घंटे तक बंदूकों के बल पर ट्रेन को अपने कब्जे में लिया । घात लगाकर किए गए इस हमले में 3 लोगों की मौत हो गई इस नक्सली हमले को अंजाम देने वालों में करीब 50 महिलाएं भी शामिल थी जो कि आधुनिक छोटे हथियारों से लैस थीं।[17] नक्सलियों द्वारा आत्मसमर्पण करने में पुलिस विभाग द्वारा की जाने वाली देरी भी एक कारण रही है। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिले नारायणपुर में महिला नक्सली कमांडर मेनी मंडल उर्फ अग्नि मडंवी को मुख्यधारा में लौटने के लिए 8 महीने का समय लग गया। हालांकि पुलिस विभाग द्वारा उक्त महिला से पूछताछ की गई। लेकिन 08 माह तक वह पुलिस विभाग के चक्कर लगाती रही। पुलिस को दी जानकारी में मेनी ने बताया कि बस्तर में नेपाल से नक्सली आकर स्थानीय नक्सलियों को प्रशिक्षण देते हैं। अबूझमाज क्षेत्र में आंध्र प्रदेश और बिहार के नक्सली अक्सर आते हैं जिन्हें हथियार चलाने घात (Ambush) लगाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। 5 दिसंबर 2013 को पुलिस ने छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में पुलिस ने 11 नक्सली सहयोगीयों को (जनसुरक्षा अधिनियम 2005) गिरफ्तार किया, जिसमें लगभग 8 महिला नक्सली सहयोगी थीं।[18]

भारत में माओवाद के तथाकथित आदि्गुरु चारू मजूमदार के दौर से ही हथियारों को मनुष्य की तुलना में ज्यादा महत्व दिया गया। जबकि हथियार कभी क्रांति नहीं करते क्रांति मनुष्यों द्वारा की जाती है जिसमें हथियारों का प्रयोग होता है। यहां सवाल यह भी है कि कौन किसका प्रयोग करे हथियार मनुष्य का या मनुष्य हथियारों का।[19] लोकसभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए गृह राज्य मंत्री श्री किरण रिजिजू ने कहा था कि सरकार के संज्ञान में नक्सलियों द्वारा आदिवासियों के शोषण की कई घटनाएं आई हैं। जिनमें महिलाओं का यौन शोषण, बलात्कार, जबरन विवाह और छेड़छाड़ की घटनाएं शामिल थी। कुछ महिला कैडरों ने कहा कि विवाह पूर्व नसबंदी तथा गर्भवती महिला के दलों का गर्भपात तक कराया गया। आत्मसमर्पण करने वाली महिला के दलों का कहना था कि आदिवासी तथा गरीब एवं वंचित वर्ग के परिवारों के बच्चों को जबरन भर्ती किया जाता है। गृह राज्य मंत्री के अनुसार वर्ष 2004 से 15 जुलाई 2014 तक माओवादियों द्वारा 4955 नागरिकों की हत्या की गई।[20] महिलाएं ही नहीं नक्सलियों के संगठन में बच्चों की संख्या भी चिंता का विषय

है। बस्तर संभाग के बीजापुर, नारायणपुर, दंतेवाड़ा समूह व कांकेर जिले के अंदरूनी गांव में नक्सली 10 से 16 साल तक उम्र के बच्चों को अपने संगठन में भर्ती करने पर आमदा रहते हैं।नक्सली मनोवैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत ब्रेनवाश कर बच्चों को लोकतंत्र के विरुद्ध भड़काते हैं। गुप्तचर विभाग के अनुसार किशोरों से बना स्माल एक्शन नक्सल ग्रुप दर्जनों घटनाओं को अंजाम दे चुका है। ऐसी परिस्थिति में बस्तरवासी अपने बच्चों को नक्सलियों के हवाले करने की जगह दूरस्थ स्कूलों, छात्रावास और गुरुकुल में भेज रहे हैं। दंतेवाड़ा स्थित जावंगा एजुकेशन सिटी में ऐसे सैकड़ों बच्चे अध्ययनरत हैं।[21]

हाल ही में केंद्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि देश की सुरक्षा के आड़े आ रहे विद्रोहियों, उग्रवादीयों का सफाया कर दिया जाएगा। साथ ही वर्ष 2023 तक देश में नक्सलियों का खात्मा हो जाएगा।[22] वैसे गांवों में महिलाओं से निपटने के लिए महिलाओं की खास तौर पर जरूरत होती है, वह महिलाओं से आसानी से बात भी कर सकती हैं। गांव की महिलाओं से पुरुष अधिकारियों की बजाए महिला अधिकारी आसानी से बात कर सकती हैं। हालांकि महिलाओं को गांवों में महिला अधिकारियों की तैनाती होने से फायदा मिलेगा लेकिन इससे इतर नक्सलियों से मुठभेड़ में भी अब महिला नक्सिलयों से लड़ने में सी0आर0पी0एफ0 की महिलाओं को काफी आसानी होगी। फलतः सी0आर0पी0एफ0 के बैच में महिलाओं को 44 हफ्तों की ट्रेनिंग दी गयी। इसमें जंगल में बिना हथियार के लड़ने की भी ट्रेनिंग, स्मार्ट वेपन चलाने सहित कई ट्रेनिंग शामिल थीं। इसके बाद इन प्रशिक्षित महिला अधिकारियों को सबसे ज्यादा नक्सलियों से प्रभावित इलाके छत्तीसगढ़ के बस्तर और झारखंड के अन्य संवेदनशील इलाकों में भेजा जाना था।[23] आंकड़े बताते हैं कि साल 2018 के शुरुआती 60 दिनों में अलग–अलग जगहों पर नौ नक्सली मारे गए, जबकि 91 नक्सलियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस ने नक्सलियों के पास से 5 एके–47 और एके–56 समेत 80 राइफलें भी बरामद की हैं। वहीं नक्सलियों से मुठभेड़ की कुल 15 घटनाओं में एक आम आदमी की भी मौत हुई। साथ ही जनवरी 2017 से लेकर मार्च 2018 तक नक्सल प्रभावित राज्यों में सुरक्षा बलों द्वारा नक्सलियों के विरूद्ध निम्न कार्यवाहियॉ की गईं–[24]

1. 16 कैंप ध्वस्त, 28 मुठभेड़, 243 हथियार जब्त।
2. 423 आईडी, 13,261 गोला–बारूद बरामद।
3. 2,485 किलो विस्फोटक, 26,863 डेटोनेटर बरामद।
4. 259 लोग गिरफ्तार, 43 का सरेंडर।

27 अप्रैल 2019 को सी–16 कमांडो दस्ता और पुलिस का नक्सल विरोधी दस्ते द्वारा संयुक्त रूप से जंगल काबिंग एवं फायरिंग में गता दलम की डिवीजनल कमेटी की सदस्य रामको उर्फ कमला मानकी नारोहे को मुठभेड़ में ढेर कर दिया गया। रामको पुलिस के खिलाफ कई बड़े हमलों में शामिल थी, जिस कारण उसके ऊपर 16 लाख का इनाम घोषित किया गया था।[25] गढ़चिरौली में पिछले वर्ष 22 अप्रैल को महाराष्ट्र पुलिस ने मुठभेड़ में करीब 40 नक्सलियों को मार गिराया था और जिसकी मजिस्ट्रेट जांच अभी चल रही है। इस घटना के बाद नक्सल प्रभावित जगहों पर ग्रामीणों को हो रही परेशानियों पर संवेदनशील होकर सोचने की आवश्यकता है। आत्मसमर्पण के लिए अनेक महिला नक्सलियों ने आरोप लगाया कि पुरुष नक्सलियों द्वारा उनका शारीरिक शोषण होता है। उनके अनुसार 14–18 साल उम्र की नाबालिग लड़कियों को भी नक्सली अगवा कर उनका शारीरिक शोषण करते हैं। इन लड़कियों को सेक्स के अलावा, खाना बनाने के

लिए तथा बम बनाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। 20 वर्षीय सविता मुंडा जो नक्सलियों की बिहार में एरिया कमांडर थी, ने आत्म समर्पण करने के बाद कहा कि वह अपने साथियों द्वारा लड़कियों के शोषण से डरकर रही है।[26]

## निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लोकतांत्रिक भारत में आंतरिक रूप में किसी भी सशस्त्र विद्रोह को किसी भी पैमाने से उचित या वैध नहीं ठहराया जा सकता है। उन सभी महिलाओं को जो कि नक्सलवादी संगठनों का हिस्सा रही हैं, नक्सल प्रभावित राज्यों की सरकारों को उनके आत्मसमर्पण के लिए कार्ययोजना बनानी होगी। नक्सल प्रभावित गांवों की महिलाओं से पुरुष अधिकारियों की बजाए महिला अधिकारी आसानी से बात कर सकती हैं, फलतः नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के गांवों कस्बों आदि स्थानों पर महिला सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की जानी चाहिए। यदि महिला नक्सली आत्मसमर्पण करती हैं तो उसको सम्मान दिया जाना चाहिए। आत्मसमर्पण की कार्यवाही में किसी तरह की परेशानी नक्सलीयों को न हो इसका ध्यान भी दिया जाना चाहिए। ऐसे में पुलिस को स्थानीय लोगों के प्रति उदारता एवं नक्सलियों के प्रति सख्ती रखनी चाहिए। स्थानीय लोगों की सहायता तथा भय के वातावरण का फायदा उठाकर ही नक्सली जिंदा हैं। महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचारों को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। जो महिलाएं हिंसा का रास्ता त्याग कर मुख्यधारा में लौटना चाहती हैं उनकी मुख्यधारा में लौटने की कार्यवाही को त्वरित रूप दिया जाना चाहिए। राज्यों की सरकारों को चाहिए की वह धरातल पर हो रहे कार्यों की जांच करे जिससे प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को उनका वास्तविक हक मिलता रहे। किसी भी स्थिति में वहां की जनता के साथ अन्याय न हो।

## संदर्भ सूची


1. https://hindi.webdunia.com/woman-special/hindi-article-on-women-status-in-india 117090400065_1.html
2. वार्षिकी रिपोर्ट 2018–19, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार पृ0स0 07
3. https://www.bbc.com/hindi/india/2013/11/131128_women_join_maoist_groups_vs
4. https://www.claws.in/1006/womens-role-in-the-naxalite-movement-pratibha-singh.html
5. https://www.bbc.com/news/world-asia-india-24456634
6. https://idsa.in/idsacomments/WomeninMaoistRanks_pvramana_200813
7. सिंह, उदयभान कुमार अमन, भारत की आंतरिक सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन, (2018) पृ.स.–99
8. https://hindi.oneindia.com/news/india/why-an-all-woman-anti-naxal-force-was-the-need-of-the-hour-378995.html
9. गुप्त परशुराम, नक्सल विद्रोह समस्या एवं समाधान, (2012) पृ0स0–44
10. https://aajtak.intoday.in/story/naxal-leader-killed-in-encounter-in-chattisgarh
11. https://www.bhaskar.com/news/JHA-RAN-HMU-naxal-woman-surrendered-in-simdega
12. शर्मा नरेन्द्र कुमार, भारत में नक्सलवाद,(2012) पृ0स0 74–75
13. राष्ट्रीय सहारा, देहरादून संस्करण, 30 जुलाई 2013

14. राष्ट्रीय सहारा, देहरादून संस्करण, 15 जून 2013
15. बघेल, वीरेन्द्र सिंह, नक्सल हिंसाः एक जन संघर्ष का भटकाव, (2013) पृ0स0 40
16. तदैव
17. हिंदुस्तान, देहरादून संस्करण,14 जून 2013
18. राष्ट्रीय सहारा, देहरादून संस्करण, 06 दिसम्बर 2013
19. राष्ट्रीय सहारा, देहरादून संस्करण, 30 जुलाई 2013
20. https://hindi.webdunia.com/regional-hindi-news/महिला नक्सली होती हैं यौन शोषण का शिकार
21. दैनिक जागरण, देहरादून संस्करण, 19 सितम्बर 2018, पृ.स. 09
22. राष्ट्रीय सहारा, देहरादून संस्करण, 14 अप्रैल 2019
23. https://hindi.oneindia.com/news/india/why-an-all-woman-anti-naxal-force-was-the-need-of-the-hour-378995.html
24. https://www.bbc.com/hindi/india-43488077
25. अमर उजाला, देहरादून संस्करण, 28 अप्रैल 2019
26. सिंह, राकेश कुमार नक्सलवाद और पुलिस की भूमिका (2012),पृ0स0 164